M.D.S. COLLEGE OF EDUCATION

JHAJJAR ROAD, KOSLI (Rewari)

Project

Vyan ENTERPRISES

Drama and Art in Education

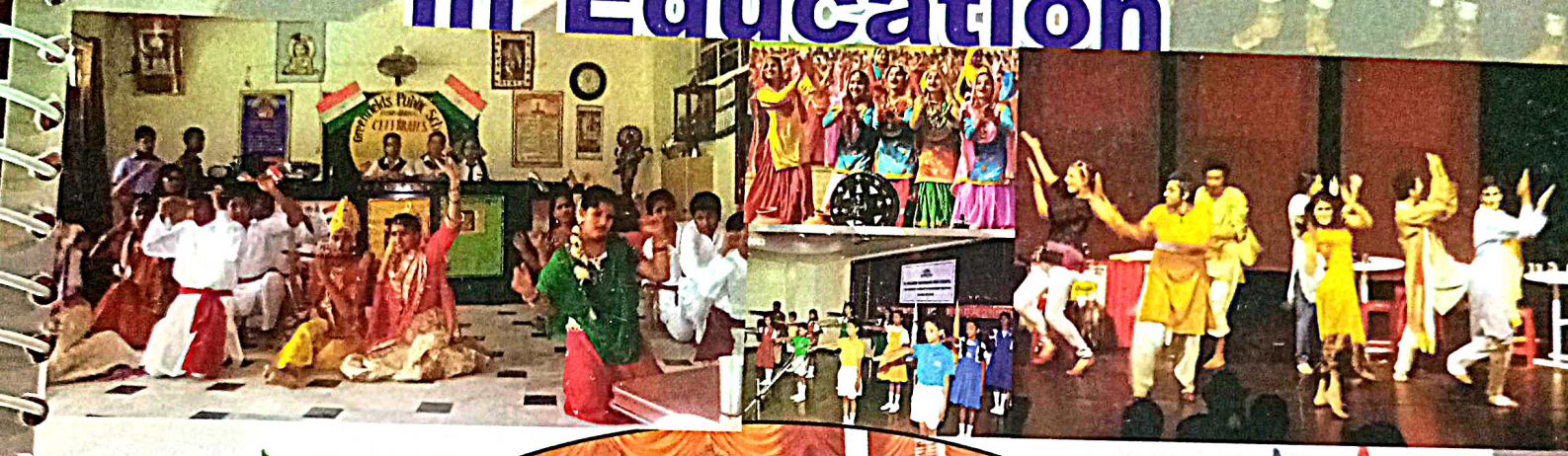

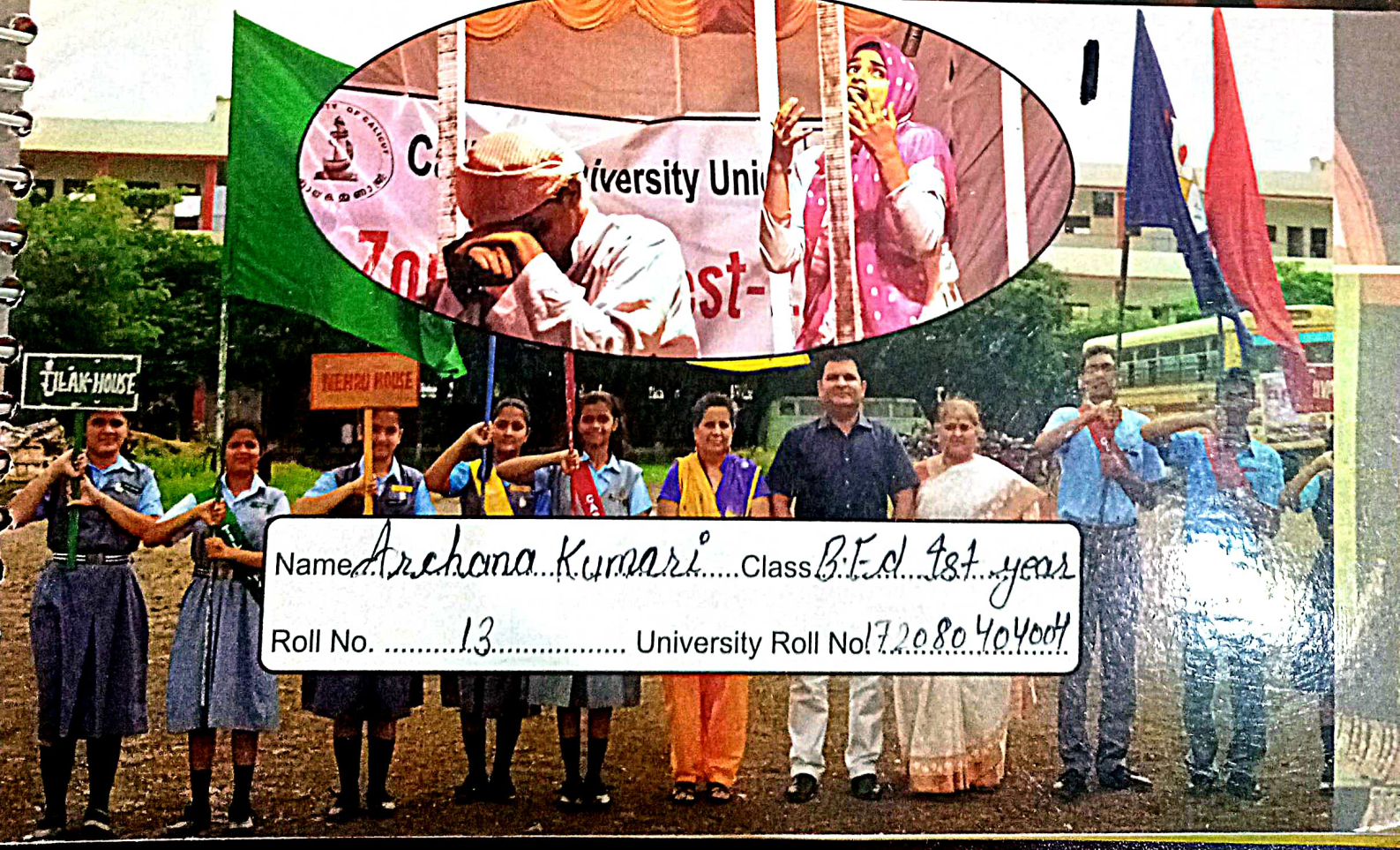

Name Archana Kumari Class B.Ed 1st year

Roll No. 13 University Roll No. 172080404004

INDEX

Name : Archana Kumari Roll No. 13 University Roll No 17208040400Y

Title : Drama and Art in Education

Sr. No.	Topic	Page No.	Date	Teacher's Sign Remarks
1.	Understanding Drama and art in Education	1-3	4-04-2018	
2.	Meaning and concept of "Art and Art" in Education.	4-9	9-04-2018	
3.	Drama and art as Pedagogy of Learning and development: and Understanding Drama.	10-13	14-04-2018	
4.	Range of Art-Activities in Drama.	14-17	17-04-2018	
5.	Experiencing, Responding and appr. drama.	17-20	22-04-2018	
6.	Dance Styles	20-24	29-04-2018	Yadav

Drama Art and Education

Meaning of Art :-

कला का अर्थ है सुंदर एवं मधुर। कला मनुष्य को ईश्वर द्वारा दी गई एक अद्भुत देन है। जिससे प्रत्येक प्राणी प्यार करता है। जीवन के प्रत्येक अंग को नियमित बनाने व सुंदर बनाने का कार्य ही कला है। मनुष्य के जीवन के विकास के लिए उसकी प्रतिभा तथा अभिव्यक्ति का विकास होना बहुत आवश्यक है। मनुष्य के अंदर एक अपूर्ण शक्ति गुप्त रूप से निरंतर कार्य करती है। अगर वह उस शक्ति का सदुपयोग करता है तो उसका जीवन सफल हो जाता है। अगर वह उस शक्ति का प्रयोग ठीक से नहीं करता है तो उसका

पतन हो जाता है। जीवन को सुखी बनाने के लिए चित्रकला, नृत्य, साहित्य आदि कलाओं की तरफ ध्यान दिया गया। इस कलाओं में से किसी एक कला को मनुष्य पूर्ण रूप से अपना लेता है। तो वह कलाकार बन जाता है। कला मन के विचारों को व्यक्त करने का एक सशक्त साधन एवं माध्यम है। साहित्य, संगीत, चीत्रकला, मूर्ति और स्थापत्य इन पाँचों ललित कला के नाम से पुकारा जाता है।

जिस प्रकार एक संगीतकार अपनी मधुर गान से अपना तथा श्रोताओं का चित प्रसन्न करता है उसी प्रकार एक चित्रकार अपनी कला की अभिव्यक्ति रेखाओं तथा रंगों के माध्यम से करता है। कला का उद्देश्य ही आनंद की प्राप्ति है लेकिन कलाकार इस आनंद को स्वयं तक सीमित नहीं रखता बल्कि दूसरों को भी बाँट देता है स्वयं को वह सृजन के सुख का अनुभव करता है दूसरों को भी वह इसकी सुंदरता से सुख की अनुभूति करता है।

इस प्रकार कला समाज के लिए बहुत आवश्यक है, इसके बिना न तो समाज का और न ही मनुष्य का विकास संभव है।

कला की परिभाषा :-

कार्यंड के अनुसार - "कला दमित वासनाओं उन्यायन है" एक कला विंदु के अनुसार :-

कला मनुष्य की सहज अभिव्यक्ति है यह विचारों, संवेदनाओं और भावना को अभिव्यक्ति है। यह करने का साधन है।

कला की प्रकृति :-

कला मनुष्य जीवन की आवश्यकता भी है और अभिव्यक्ति भी। हर देशकाल और संस्कृति में व्यक्ति भी मूलभूत आवश्यकताओं के साथ कला का बहुत गहरा संबंध है। कला वह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने भावों को अभिव्यक्त करता है। आदिकाल से कला मनुष्यों की मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती आ रही है आदि युग में भी मनुष्य द्वारा रचित कृतियां, आशाओं, कल्पनाओं आवश्यकताओं और भावों को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्ति करती थी।

मनुष्य को उस समय प्रकृति वन्य जीवों से संघर्ष करना पड़ता था। इसलिए उसने अपनी गुफाओं में पशुओं के चित्रों का निर्माण किया।

अग्नि तथा पानी से संबंधित जानकारी होने पर मनुष्य ने सभ्यता के युग में प्रवेश किया। इतिहास के प्रत्येक युग में कला का महत्व रहा है, यह संसार परमात्मा की कला का एक उदाहरण है। कला किसी भी चीज़ में निखार ला देती है। जिससे उसकी सुंदरता बढ़ती है। आकर्षण प्रेम को पैदा करता है, इसलिए कलात्मक चीज़ों से मनुष्य प्रेम करता है, और उनकी ओर आकृषित होता है।

Concept of Art Education

हमारे जीवन के साथ कला इस प्रकार जुड़ी हुई है कि हम पुरी तरह कलात्मक हो गये हैं बालक के जन्म लेने के साथ ही मधुर गीतों के साथ ही उसका जीवन कला से जुड़ जाता है।

जैसे माँ अपनी भाव लोरी गाकर प्रकट करती है तो परिवार के अंय लोग चित्र वाद्य यंत्र और अनेक प्रकार के अभिनय आदि से बालक का मनोरंजन करते हैं। बालक घर, आँगन और आस-पड़ोस के कला तत्वों से परिचय प्राप्त करता हुआ अपने भीतर कला के प्रति गहरा आकर्षण कर लेता है।

K for Kids
GREEN

उसकी चेष्टा आव-भाव और वाणी में एक लय उत्पन्न होने लगती है। इससे ही समझना चाहिए कि उसका जीवन यहीं से कला के साथ जुड़ जाता है फिर उसके बाद बालक को शिक्षा मिलती है। संस्कृति उत्सवों, मेलों की रीति रिवाज की आदि हमारी लोक संस्कृति से परिचित होते। वह भाषा, इतिहास, भूगोल जैसे विषय पढ़ता है। उसके प्रति मन में कला जैसी गहरा आस्था होने पर भी कला के प्रति गहरी आस्था होने पर भी कला के प्रति संबंध में उसका ज्ञान व्यवस्थित नहीं हो पाता।

गांव की चौपाल पर बजने वाले वाद्य यंत्र, लोक गीतों से परिचित होता है, कविता गीत, नाटक अभिनय आदि इसके जीवन के अंग बनते हैं। प्रकृति पशु-पक्षी पेड़-पौधों आदि भी उसके जीवन से संबंधित होते हैं, ये सारी चीज़ें उसके मन को लुभाती हैं। कला अपनी कल्पना-शक्ति को विकसित करती है। अतः कला का हमारे दैनिक जीवन में अपना ही महत्व है।

कला के बिना जीवन नीरस हो जाता है तभी व्यक्ति का जीवन बस एक पुतले की तरह बन कर रह जाता है।

कला के महत्व

1.) भावनाओं को प्रकट करने का सशक्त साधन :-

मनुष्य जीवन के भावनाओं के प्रति अधिक रुचि होती है, भावनाएं ही मनुष्य का निर्माण करती है। भावनाओं के प्रकट होने से मनुष्य संतुष्टि का अनुभव करता है इसलिए वह उन्हें कला के माध्यम से प्रकट करता है।

2) रचनात्मक शक्ति का विकास :-

बच्चों का ध्यान रचनात्मक कार्यों की ओर अधिक आकर्षित होता है। कला के माध्यम से बच्चे अपनी सृजनशीलता का परिचय देते हैं।

3) व्यक्तित्व का विकास :-

अपने व्यक्तित्व का विकास करने के लिए मानव कला की जानकारी अर्जित करता है। कला सामाजिक एवं सांस्कृतिक भावनाएं करने में मदद करती है कला व्यक्ति के आत्मविश्वास को बढ़ाती है।

4.) सौंदर्य चेतना का विकास :-

कला मनुष्य के मन सौंदर्य अनुभूति को विकसित करती है जिससे उसके प्रति आकर्षण उत्पन्न होता है, क्योंकि सुंदरता मानव की आत्मा में स्थित होती है।

5) सामाजिकता का विकास :-

कला हमें छोटे-बड़े निकट लाने में मदद करती है। मनुष्य एक सज्जन प्राणी है। एक कलाकार अपनी कला के माध्यम से समाज में स्थान बनाता है। वह छोटे-बड़े सभी के प्रशंसा का पात्र होता है। सभी उसे आदर और प्यार देते हैं। वह भी समाज की उपयोगिता में अपना योगदान करता है।

6) अमूर्त-भावनाओं की अभिव्यक्ति :-

कला दृश्य के माध्यम से अदृश्य भावों की कलात्मक अभिव्यक्ति को प्रेषित कर सकती है। यह दृश्य तथा अदृश्य अभिनय का सशक्त साधन है जो हमारे भावों को प्रकट करने का कौशल निर्माण करने में सहायता करती है। इस प्रकार कला बहुत-ही महत्वपूर्ण है।

7) **शांति व सद्भावना का विकास :** संसार के सभी क्षेत्रों में कला के विकास होने के कारण यह भिन्न-भिन्न देशों के लोगों को आपस में समझने में सहायक है। कला एवं संगीत की कोई सीमा नहीं होती। एक कलाकार अपने देश के बाहर उतनी ही पहचान बना सकता है जितना की उसके देश में है। माइकल जैक्सन, रविशंकर किस देश के निवासी है यह कोई नहीं पूछता फिर राजकुमार को जितना सम्मान भारत में मिलता था उतना ही रूस में मिलता था। भारतीय गीत पाकिस्तान की गली-2 में सुनाई पड़ते है। इस प्रकार कला की कोई सीमा नहीं होती।

8) **चरित्र का विकास :** कला द्वारा बच्चों में अपनी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने की योग्यता का विकास होता है तथा उनमें नैतिकता सहानुभूति परोपकार, नैतिक भाव जैसी चारित्रिक गुण विकसित होते है।

ARTS

9) बुद्धि का विकास :- बच्चों की कल्पना शक्ति अधिक होती है। कल्पना से सृजन की प्रेरणा मिलती है और सृजन से बुद्धि का विकास होता है बच्चों की बुद्धि के विकसित के लिए उन्हें कला की शिक्षा देना आवश्यक है क्योंकि यह जीवन में सृजनशीलता को विकसित करता है।

10) आर्थिक विकास :- कलात्मक वस्तुओं का निर्माण करके उन्हें बेचकर आर्थिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। कलाकृतियों का मूल्य उनकी लागत से न बल्कि उनकी सुंदरता से आंका जा सकता है। यही कारण है कि अपनी फिल्म के अभिनेता को वेतन के रूप में लाखों रुपए मिलते है, किसी कलाकार की कलाकृति लाखों डॉलर में बिकती है। जबकि उनका लागत मूल्य कुछ भी नहीं होता। सरकार को पुरस्कार और उपाधियों से कलाकार को सम्मान प्रदान करना पड़ता है।

11) राष्ट्र - एकता का विकास :- कला हमें अपने देश तथा परदेशों में मिल जुल कर रहने की प्रकृति के उद्भव में मदद करती है। यह मनुष्य को आपस में मिल जुल कर रहना सिखाती है।

INDIAN SCHOOL SA AH

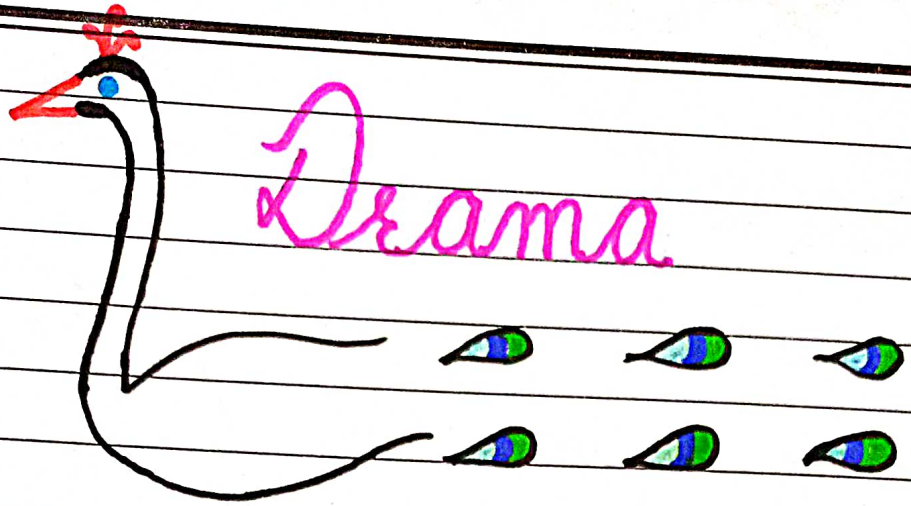

साहित्य में अनेक विधाएँ है। प्राचीन काल में इंद्रियों के आधार पर काव्य के दो प्रकार बताए है। दृश्य और श्रव्य काव्य का संबंध नाटक से है। श्रव्य काव्य का संबंध कविता, कहानी, उपन्यास आदि से है। संस्कृत में तो दृश्य काव्य को श्रव्य काव्य से अधिक उत्कृष्ठ माना है। नाटक अपनी कुछ निजि विशेषताओं के कारण दूसरों से सर्वथा अलग है जहां नाटक देखने के लिए लिखा जाता है। अन्य सभी विधाएं पढ़ने के लिए होती है।

नाटक में समय का बंधन :-

नाटककार नाटक लिखने बैठता है। तब उसे समय की सीमा ध्यान रखना होता है। इसी को हम समय का बंधन कहते है। नाटक मंच को या कोई घंटों में अभिनित किया जाना चाहिए।

दर्शकों के पास इतना समय नहीं होता की वे नाटक को लंबे समय तक देख सके। यही कारण है कि नाटककार समय सीमा को ध्यान मे रखकर नाटक का निर्माण करता है। नाटककार लिखते समय भले ही भूतकाल व भविष्यकाल से विषय चयन करें परंतु उसे अपने नाटक को वर्तमान काल से ही संयोजीत करना होता है। यह कारण है कि नाटक के मंच निर्देश वर्तमान काल में लिखे जाते हैं। जहां तक उपन्यास, कहानी कविता या पौराणिक घटना से संबंध हो तो वे वर्तमान मे बिना किसी बाधा के पढ़े जा सकते हैं परंतु नाटक में सभी घटनाएं एक विशेष ध्यान पर विशेष समय तथा वर्तमान काल में घटित होना चाहिए। नाटककार को इस बात को ध्यान रखना पड़ता है कि दर्शक कितने समय तक अपने सामने नाटक के कथानक को घटित होते नाटक मे जिस चरित्र का निर्माण किया गया है। उसका पूर्ण विकास होना चाहिए।

रेडियो द्वारा प्रसारण किए जाने के लिए लिखे नाटक को रेडियो नाटक कहते हैं। केवल श्रव्य होने के कारण इसे श्रव्य नाटक भी कहा जाता है। इसमें ध्वनि की प्रधानता होती है इसलिए इसे ध्वनि नाटक भी कहा जाता है।

University Roll No: 72080404004

दर्शकों के पास इतना समय नहीं होता की वे नाटक को लंबे समय तक देख सके। यही कारण है कि नाटककार समय सीमा को ध्यान में रखकर नाटक का निर्माण करता है। नाटककार लिखते समय भले ही भूतकाल व भविष्यकाल से विषय चयन करें परंतु उसे अपने नाटक को वर्तमान काल से ही संयोजीत करना होता है। यह कारण है कि नाटक के मंच निर्देश वर्तमान काल में लिखे जाते हैं। जहां तक उपन्यास, कहानी कविता या पौराणिक घटना से संबंध हो तो वे वर्तमान में बिना किसी बाधा के पढ़े जा सकते हैं परंतु नाटक में सभी घटनाएं एक विशेष ध्यान पर विशेष समय तथा वर्तमान काल में घटित होना चाहिए। नाटककार को इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि दर्शक कितने समय तक अपने सामने नाटक के कथानक को घटित होते नाटक में जिस चरित्र का निर्माण किया गया है। उसका पूर्ण विकास होना चाहिए।

रेडियो द्वारा प्रसारण किए जाने के लिए लिखे नाटक को रेडियो नाटक कहते हैं। केवल श्रव्य होने के कारण इसे श्रव्य नाटक भी कहा जाता है। इसमें ध्वनि की प्रधानता होती है। इसलिए इसे ध्वनि नाटक भी कहा जाता है।

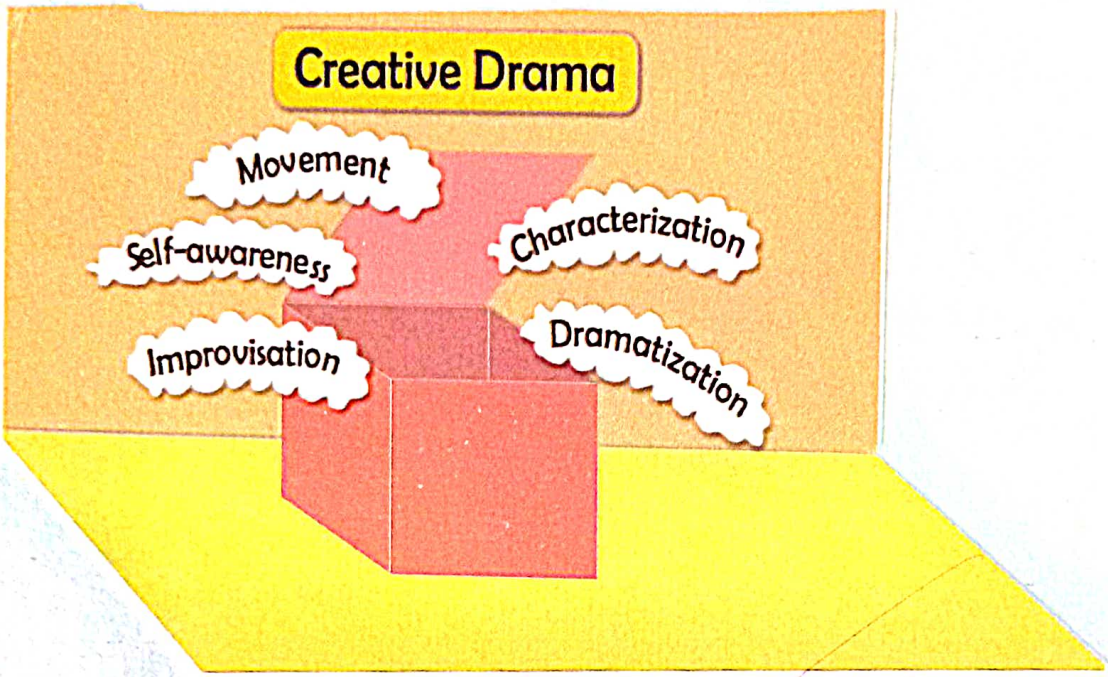
Creative Drama
Movement
Characterization
Self-awareness
Improvisation
Dramatization

Drama Activities

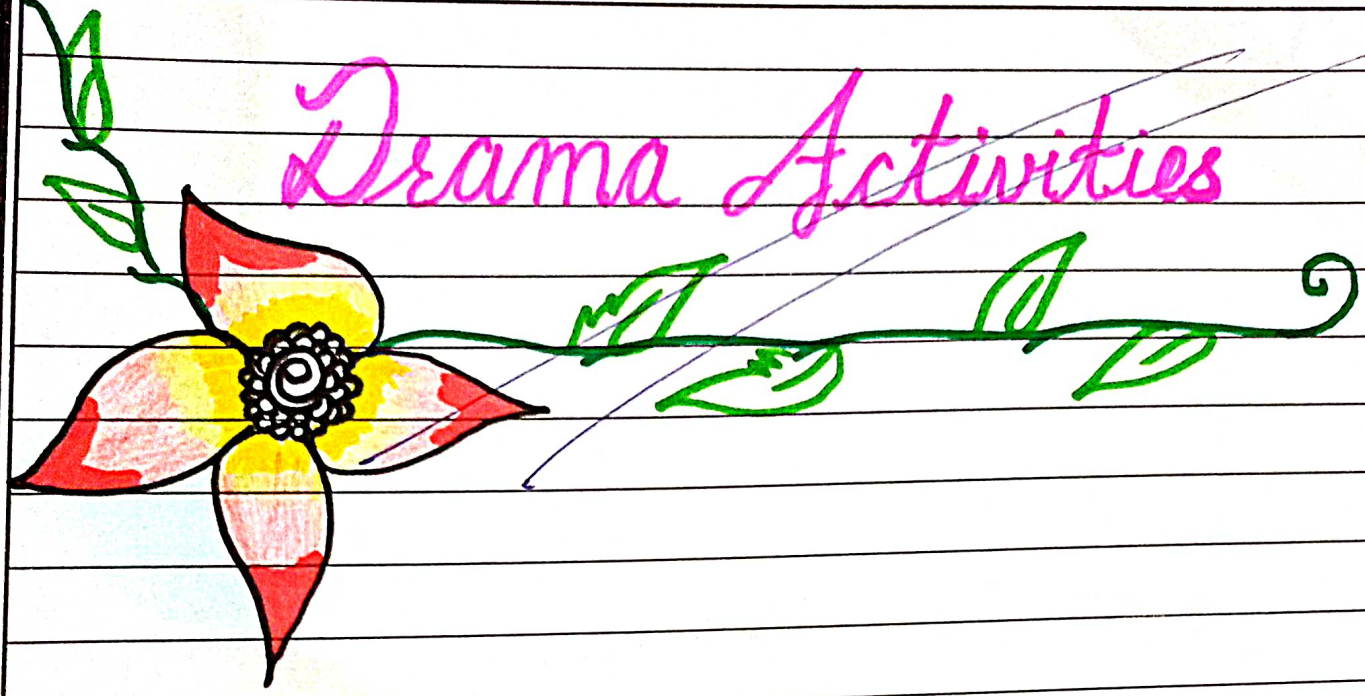

1.) Role Playing :-

इसमें बच्चों से पूछो की क्या तुम प्रधानमंत्री बनना चाहते हो। यदि बच्चे हाँ में जवाब देते उनसे प्रधानमंत्री द्वारा किए गए कार्यों का और उसके चरित्र अभिनय करने के लिए कहा जाए।

2.) Acting in Pairs :-

इन पात्रों में से एक जोड़ी है दो नर्स, दो चोर या आतंकित यात्री आदि के बारे में सोचो कि वे बाहर जाकर किस प्रकार कार्य करते हैं।

3. Example of Activities :-

खेल - खेल में बच्चों से पूछना कि कोई भी वस्तु हो सकती है। जैसे कि रोबोट या कोई दूसरी वस्तु जब हम उन की तरफ आ रहा हो बच्चा - २ किस तरफ आ रहा है तो बच्चा अपने जीवन को बचाने के लिए भागने का प्रयास करेगा या वही बैठा - बैठा उसके बारे में सोचता रहेगा।

4.) Life Saving :-

इसमें बच्चे डॉक्टर, फाइट - फाईटर, फाईर - ब्रिगेड सहयोगी स्टाफ आदि अपने जीवन को बचाने के लिए लड़ रहे है। इनकी एक टीम होने का नाटक करना।

कौशल - विकास :-

इसमें मौखिक - लिखित, सार्वजनिक बोल आदि अवस्था की प्रक्रिया बच्चों को पूछना कि एक साथी मिल जाने पर दूसरे साथी को भूल जाना।

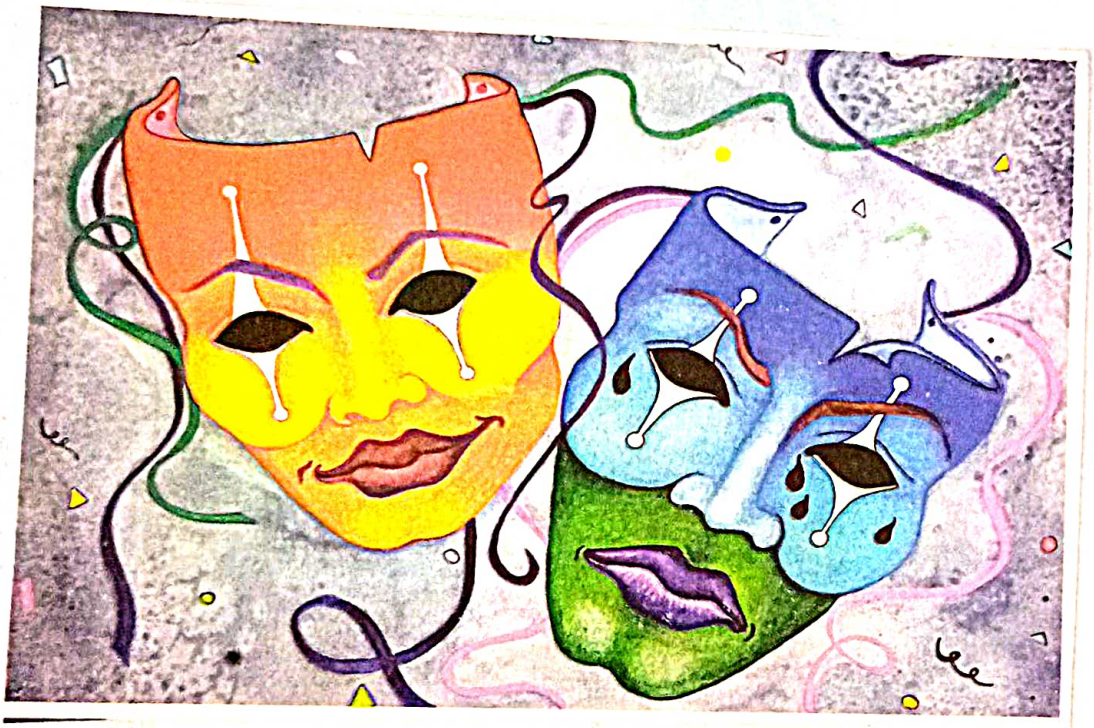

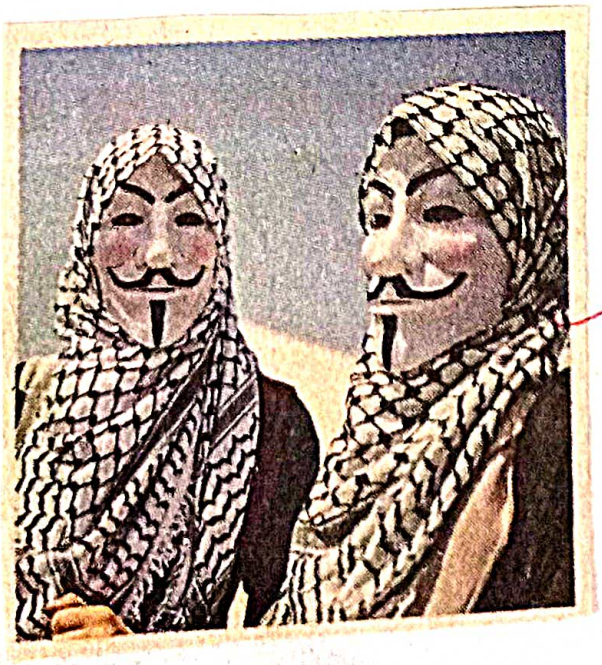

Dance :-

समय 10 मिनट। इसमें समूह होते हैं। इसमें फर्श पर बच्चों को एक circle में बैठने को कहा जाता है और स्टेप वाइज डांस करने के लिए बुलाया जाता है। संगीत के बारे में अपने - अपने कहने को भी कहा जाता है।

Discuss the Story :-

इसमें कहानी के साथ रंग-मंच की सामग्री का उपयोग भी करना पड़ता है और दृश्यों का वर्णन भी किया जाता है। इन्होंने जो देखा वो कैसा लगा।

Mime :-

यह एक प्रकार का खेल है। इसमें कोई आवाज नहीं होती। इसमें इशारों में अभिनय किया जाता है।

Hair dresses Damtist :-

Mask :-

इसका अर्थ होता है मुखौटा या नकली चेहरा। इसमें हाथ खुद के डिजाइन से एक मुखौटा तैयार करते हैं। उसी के

अनुसार चेहरे के हाव-भाव आदि करने पड़ते हैं।

Middle to lower Primary Level :-

प्रत्येक छात्र को पेपर, पैन, और पैंसिल, रंगीन पैंसिल, गत्ता, टेप, स्टैपलर, गोंद आदि की आवश्यकता होती है।

Drama Role of Learning

कोई भी ऐसी कहानी चुनें, जिसे आप और आपके विद्यार्थी हिंदी में या स्थानीय भाषा में अच्छी तरह जानते हो। यह किसी पुस्तक से भी हो सकती है। लेकिन आपको पुस्तक के बिना यह कहानी सुनानी होगी। यह कहानी आपके पाठ्य-पुस्तक के किसी विषय से जुड़ी हो सकती है। वह किसी स्थानीय त्योहार अथवा समुदायिक आयोजन से जुड़ी हो सकती है। यह कहानी एक सामान्य तरीके से विद्यार्थियों के अनुरूपा के लिए महत्वपूर्ण हो सकती है। विज्ञान इतिहास या भूगोल जैसे विषय पर उनका ज्ञान

विकसित करने वाले हो सकती है। संभव है कि इस कहानी में कोई ऐसा नैतिक संदेश हो जिसे सिखाना आपको विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण हो सकती है।

यह कहानी आपकी कक्षा के लिए उपयुक्त क्यों है?

1) कहानी की अवधि पर विचार करें, क्या इसे छोड़े से समय में सुनाया जा सकता है!

2) कहानी की कठिनाई पर विचार करें। इसमें उपयोग किए गए शब्द व वाक्यांश परिचित है या अपरिचित।

3) इस बात पर विचार करें कि आपके पास कौन-2 से चित्र है तथा साधन, या बनाने की आवश्यकता जिससे कहानी को विद्यार्थियों के लिए अधिक जीवंत बनाने में मदद मिल सकती है। उदाहरण के लिए क्या आपको किसी टोपी, झाड़ू या लैंप के चित्रों की जरूरत पड़ेगी, या आप वास्तविक वस्तुओं का उपयोग करेंगे।

तैयारी :-

1) कोई ऐसी कहानी चुने जो आपको अच्छी तरह मालूम हो।

2) इस कहानी का एक बहुत सरल अंग्रेजी संस्करण तैयार करें।

subject
reflection
reflecting
products
socialization
separate
meaning
individual
education
improv
apply
enhance
derived
foster
appreciate
physically
appreciation
principles
support
breadth
medium
mind
understand
emotionally
stage
performer
acting
play
roles
lights
critic
body
processes
content
dance
expression
arts
experience
progress
make
learn
art
non-competitive
historian
traditional
reflect
creator
necessitating
self-concept
perform
program
student
philosophy
overall
imaginatively
life
creativity
learns
form
inspire
supportive
contribution
drama
students
theatre
positive
socially
areas
greater
chance
giving
risk
dramatic
society
mode
fosters
placed
acquisition
without
fine
whole
depth
self-development
joyful
ensemble
yet
consumer
movement
development
imagination
level
create
situation
growth
encouraging
interests
imaginative
extended
atmosphere
intellectual
embrace
insights
character
voice
hand
partly
music
involved
uniqueness
articulated
school
makes
forms
rationale
develop
consequences
developed
provides
fostered
intuitive
response
inclusion
interaction
learning
critique

iii) यह कहानी सुनाने का अभ्यास करें ताकि आप इसमें आत्मविश्वास महसूस करें।

iv) अंग्रेजी में मुख्य शब्दों और कथाओं को शब्द कार्डों पर लिखे।

v) यह तय करे की आप किस तरह विद्यार्थियों को कहानी सुनने के लिए तैयार करेगें लय, गीत, या अन्य।

Drama Arts for Learning :-

विद्यार्थी उस समय सबसे अच्छे ढंग से सीखते है। जबकि वे शिक्षण के अनुभव से सक्रिय रूप पर जुड़े होते है अन्य विद्यार्थियों के साथ आपस में बातचीत करने और अपने विचारों को साझा करने में आपके विद्यार्थी अपनी समय की गहराई बढ़ा सकते है, जिसका उपयोग पाठ्यक्रम में कई क्षेत्रों में किया जाता है।

1. कहानी सुनाना :-

कहानियां हमारे जीवन को अर्थपूर्ण बनाने में मदद करती है। कई पारंपरिक कहानियां पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है। वे हमें बचपन में सुनाई

देशभक्ति गीत

है शौक यही अरमान यही
हम कुछ करके दिखलाएंगे
मरने वालो की दुनिया में
अमरो के नाम लिखाएंगे।

रोको मत आगे बढ़ने दो
आजादी के दीवाने हैं,
हम मातृभूमि की सेवा में,
अपना सर्वस्व लगाएंगे।

हम उन वीरों के बच्चे हैं,
जो धुन के सच्चे हैं।
हम उनका नाम बढ़ाएँगे,
हम जग में नाम कमाएंगे।

गई थी और इनसे हम समाज के उन नियमों और मूल्यों के बारे में पता चलता है जिनमें हमारा जन्म हुआ था।
कहानी कक्षा में एक शक्तिशाली माध्यम होती है। रोचक, रोमंचक और प्रेरक हो सकती है।
1) हमें जीवन में काल्पनिक संसार में ला जाती है।
2) चुनौतीपूर्ण हो सकती है।
3) नए विचारों के बारे में सोचने के लिए
4) प्रेरित कर सकती है।

गीत :-

कक्षा में गीत और संगीत के माध्यम से अलग-2 विद्यार्थियों को योगदान करने सफल होने और उन्नति करने का अवसर मिल सकता है। एक साथ मिलकर गाने से जुड़ाव बनता है, इससे विद्यार्थी खुद को इसमें शामिल महसूस करते हैं। क्योंकि यहां ध्यान किसी एक व्यक्ति के प्रदर्शन पर नहीं होता। गीतों में सुर व लय के कारण उन्हें याद रखना सरल होता है। इसके द्वारा भाषा व बोलने के विकास में मदद मिलती है। यहां तक की सूत्रों और सूचियों को भी एक गीत या कविता के रूप में याद करने योग्य रखा जा सकता है।

MAHIMA CULTURAL
CENTER

रोल प्ले :

1) रोल प्ले वह होता है जिसमें विद्यार्थी किसी परिदृश्य के दौरान भूमिका निभाते हैं वे इस भूमिका में बोलते और अभिनय करते हैं तथा वे जिस पात्र की भूमिका निभा रहे हैं उसके व्यवहार और उद्देश्यों को अपना लेते हैं। रोल प्ले के कई लाभ हैं क्योंकि उसमें वास्तविक जीवन की स्थितियों पर विचार करके अन्य लोगों की भावनाओं के प्रति समझ विकसित की जाती है। इसमें निर्णय लेने का कौशल विकसित होता है

2) उदाहरण के लिए हो सकता है आप इस बात का पता लगा रहे हो कि कक्षा में टकराव को किस प्रकार से खत्म किया जा सकता है गणित में विद्यार्थी कोणों या आकृतियों की भूमिका निभाकर उनके गुणों और संयोजनों की खोज करते हैं।

नाटक :

अधिकांश विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए कक्षा में नाटक का उपयोग करना एक अच्छी रणनीति है। नाटक में कौशल और आत्मविश्वास विकसित होता है। इसका उपयोग इस बात के मूल्यांकन के लिए भी किया जा

सकता है कि आपके विद्यार्थी किसी विषय के बारे में क्या समझते हैं।

संदेश किस प्रकार मस्तिष्क से कोनों, आँखों, नाक, हाथों तथा मुँह तक जाते हैं। यह दिखाने के लिए टेलीफोनों की भूमिका निभाकर मस्तिष्क के काम करने के तरीके के बारे में विद्यार्थी की समझ को बताने वाला एक नाटक है।

Drama Basic :-

साहित्य, फिल्म और टी०वी० यह लचीला, डिग्री छात्रों को बाहर ले जाने के लिए समाज के सबसे शक्तिशाली मीडिया के कुछ महत्वपूर्ण विश्लेषण के लिए सक्षम बनाता है। आप तरीके में जो फिल्म और टेलीविजन के इतिहास, संस्कृति और पहचान सके।

Film and Telivision Studies :-

हांगकांग सिनेमा में हॉलीवुड और विज्ञान जगत से Brunel में कला के स्कूल में अंग्रेजी, पत्रकारिता, संगीत और रचनात्मक संगीत, प्रौद्योगिकी, फिल्म और टेलीविजन अध्ययन और आधुनिक नाटक में सफल, एकल और संयुक्त सम्मान की डिग्री. पाठ्यक्रम शामिल है। यह एक जीवंत, मैत्रीपूर्ण और रचनात्मक अध्ययन करने के लिए जगह है।

उड़ीसा नृत्य

उड़ीसा नृत्य प्रेम और भाव, देवताओं और मानवों से जुड़ा सांसारिक और लोकोतर नृत्य है। उड़ीसी एक उच्च शैली नृत्य है और कुछ मात्रा में शास्त्रीय नाट्य शास्त्र तथा अभिनय दर्पण पर आधारित है। उड़ीसी नृत्य मुख्य रूप से नाट्य शास्त्र द्वारा स्थापित सिद्धांतों का अनुसरण करता है। चेहरे का भाव, हस्तमुद्राएं और शरीर की गतिविधियों का उपयोग एक निश्चित अनुभूति एक भावना या नवरसों में से किसी एक के संकेत के संकेत के लिए किया जाता है।

इसमें निचला हिस्सा स्थिर रहता है। शरीर के ऊपरी हिस्से के केंद्र द्वारा धुड़-धुरी के समानांतर एक ओर से दूसरी ओर गति करती है। जहां पैरों की गतिविधियों की बहुसंख्यक संभावनाएं भी है।

भरतनाट्यम्

भरतनाट्यम् दक्षिण भारत का शास्त्रीय नृत्य है, जो न केवल दक्षिण भारत में बल्कि पूरे भारत में लोकप्रिय है। यह धार्मिक नृत्य है।

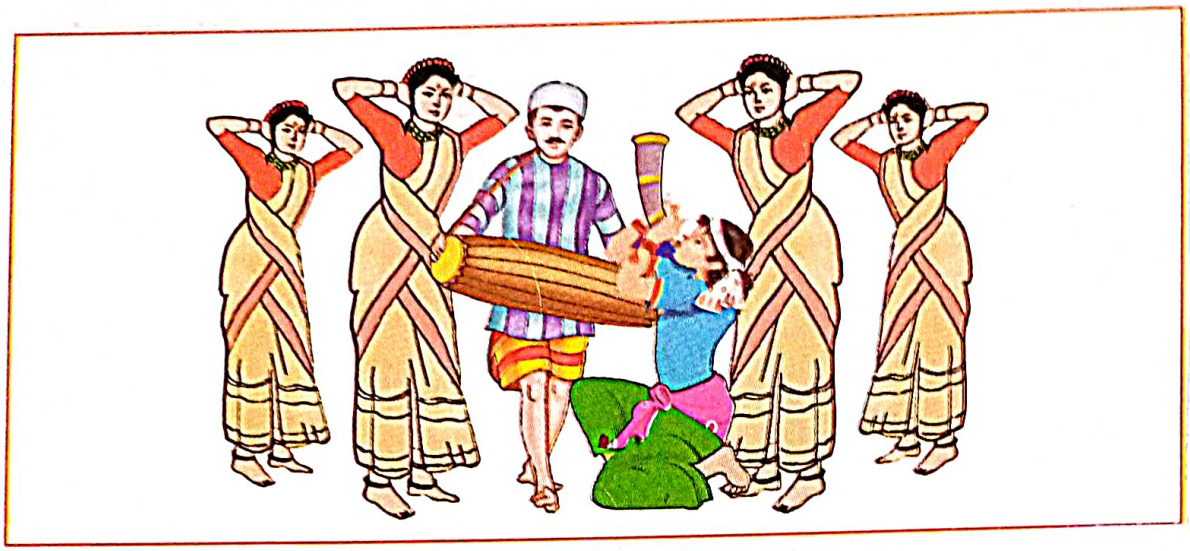

यह ईश्वर की उपासना के लिए मंदिरों में किया जाता है। भरतनाट्यम की शिक्षा देने वाले आचार्य नतुवन कहलाते हैं। इसमें सभ्यता व संस्कृति का विकास होता है। भरतनाट्यम अपनी भाव - अभिव्यंजना के लिए प्रसिद्ध है।

यह राधा - कृष्ण तथा अन्य देवी - देवताओं की एकल लिलाओं को नृत्य द्वारा मानवीय ढंग में प्रस्तुत किया जाता है। जैसे नृत्य में कृष्ण जी की बांसुरी बजाने की मुद्राओं को अंग एवं संकेतों द्वारा स्पष्ट एवं प्रदर्शित किया जाता है।

कथकली नृत्य

कथकली नृत्य दक्षिण भारत का एक प्राचीन शास्त्रीय नृत्य है। केरल तथा मालाबार में इसका अधिक प्रचार है। इसमें नृत्य, संगीत तथा अभिनय का सुंदर संगम दिखाई देता है। 'कथक' शब्द की उत्पत्ति 'कथकली' से हुई है। जिसका अर्थ है नृत्य नाट्यम। इसकी पौराणिक कथा तथा रामायण तथा महाभारत कथा का चित्रण केवल मुद्राओं द्वारा मूक अभिनय द्वारा किया जाता है।

इसमें अभिनेता स्वयं कुछ नहीं बोलता।

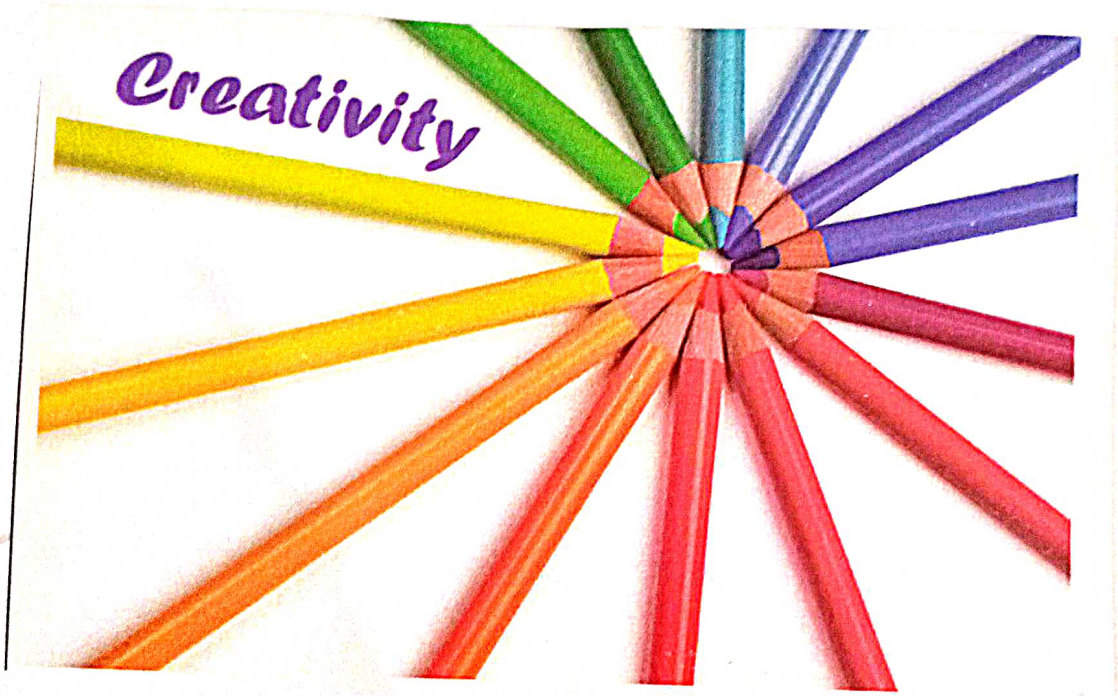
Creativity

जिस पात्र को संवाद होता है, वह रंगमंच पर आकर कथा के अनुसार अभिनय करता है। पीछे से गायक संगीत, कविताओं के द्वारा अपने भावों को स्पष्ट करते हैं। संगीत में बांसुरी का प्रयोग किया जाता है।

स्त्रियों का अभिनय भी अधिकतर पुरुष ही करते हैं। साज-सज्जा व वेशभूषा इस नृत्य की प्रमुख विशेषता है।

प्रदर्शनी

प्रदर्शनी का अर्थ व महत्व : इसका अर्थ है, प्रदर्शन करना, यह किसी भी वस्तु का हो सकता है। किसी भी विषय से संबंधित हो सकता है। किसी भी वस्तु का मतलब जिन वस्तुओं का प्रयोग हम दैनिक जीवन में करते हैं। जैसे चीनी, साबुन, बिजली आदि प्रदर्शनी में हम अपनी वस्तुओं और जो हमने खुद बनाई है उसका प्रदर्शन कर सकते हैं।

महत्व :-

प्रदर्शनी हेतु विद्यार्थी जो कुछ भी बनाता है उसमें उसकी कला झलकती है। उसकी रचनात्मकता का पता चलता है। प्रदर्शनी से विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि होती है। इसमें विद्यार्थियों के ज्ञान को स्थाई रखा जाता है। व जल्दी व सुगमता से सिखा जाता है। इसमें विद्यार्थियों के स्पष्ट बोलने की क्षमता का विकास होता है। इससे प्रदर्शनि करने वाले और देखने वाले दोनों के ज्ञान में ही वृद्धि होती है।

प्रदर्शनी के लिए वस्तु लेकर जाना :-

प्रदर्शनी के प्रदर्शन के लिए वस्तुएं भी साथ लेकर चलनी चाहिए जैसे मेद या फिर कोई बोर्ड, ताकि उन पर रख आसानी से वस्तुओं का प्रदर्शन किया जा सके।

Ayadav